CAMBRIDGE
International Education

Cambridge IGCSE™

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/02**

Paper 2 Listening **October/November 2025**

TRANSCRIPT **Approximately 45 minutes**

This document has **8** pages. Any blank pages are indicated.

© Cambridge University Press & Assessment 2025

https://xtremepape.rs/

MALE: **अभ्यास 1: प्रश्न 1–6**

प्रश्न 1 से 6 के लिए आप क्रमानुसार कुछ संक्षिप्त संवाद सुनेंगे। उनके आधार पर प्रत्येक प्रश्न का उत्तर नीचे दी गई रेखा पर लिखिए। आपके उत्तर जहाँ तक हो सके संक्षिप्त होने चाहिए।

आपको प्रत्येक संवाद दो बार सुनाया जाएगा।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: **संवाद 1**

MALE: * छात्रो, आज हम फूल वालों की सैर पर जा रहे हैं जो दिल्ली का एक अनूठा वार्षिक उत्सव है। उत्सव का मुख्य आकर्षण एक जलूस है जो महरौली के जोगमाया मंदिर से शुरू होकर सूफ़ी संत बख़्तियार काके की दरगाह पर समाप्त होता है। देश के कोने-कोने से आए फूलों की सजावट और बारिश की जाती है। मंदिर पर फूलों के छत्र और दरगाह पर फूलों के पंखे और चादरें चढ़ाई जाती हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेलों और दस्तकारी के आयोजन भी होते हैं। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 2**

MALE: पुरुषः * नमस्कार। आहार भोजनालय?

महिलाः जी, शनिवार को 12 लोगों की मेज़ बुक कर लीजिए!

पुरुषः ज़रूर! क्या कोई विशेष अवसर है?

महिलाः नहीं। पिछले महीने मेरे जन्मदिन पर आपके यहाँ आकर अच्छा लगा था तो सोचा क्यों न बेटे के दीक्षान्त पर भी वहीं चलें?

पुरुषः अपनी पसंद का खाना बनवाएँगी या हमारी थाली लेंगी?

महिलाः नहीं, आपकी थाली ठीक है। भुगतान क्या पहले से करना होगा?

पुरुषः जी, बड़े समूह के लिए पहले करना होता है। अभी पाँच हज़ार दे दीजिए। भोजन के दिन आपका बिल बड़ा होगा तो आपको छूट मिलेगी। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: **संवाद 3**

MALE: * हैलो माया! स्कूल का छायांकन क्लब गर्मी की छुट्टियों में एक कार्यशाला का आयोजन कर रहा है। पता नहीं तुमने नोटिस देखा या नहीं पर संयोजन की ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गई है। मुझे मालूम है कि तुम्हें फ़ोटो खींचने का शौक़ है और तुमने कई ईनाम भी जीते हैं। कार्यशाला में हम देश के एक प्रसिद्ध छायाचित्रकार को बुला रहे हैं जो फ़ोटो खींचने की बारीक़ियाँ सिखाएँगे। एक प्रतियोगिता भी होगी और विजेताओं को पुरस्कार मिलेंगे। मैं चाहता हूँ कि तुम भी भाग लो। फ़ोन करना। बाय! **

[Pause 10 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2025

https://xtremepape.rs/

FEMALE: संवाद 4

MALE: पुरुषः * तुम ने कल रात वाला टीवी कार्यक्रम देखा जिसके बारे में मैंने बताया था?

महिलाः कौन सा? खेल वाला?

पुरुषः नहीं, वह तो पिछले हफ़्ते था। यह तो जानवरों पर था। क्या... कार्यक्रम था?

महिलाः अरे हाँ! मैं सोचती थी उबाऊ होगा। पर वो तो वाक़ई बहुत मज़ेदार निकला!

पुरुषः मुझे ख़ुशी है कि तुम्हें भी पसंद आया। कितनी सारी नई बातें जानने को मिलीं न?

महिलाः सच में! पर पता है मुझे सबसे अच्छा उसका संगीत लगा।

पुरुषः हाँ! जानवरों की गतिविधियों के साथ क्या संगत बिठाई थी! **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 5

FEMALE: * इस वर्ष का अरबी यात्रा बाज़ार दुबई के विश्व व्यापार केंद्र में शुरू हुआ। इस प्रदर्शनी में भारत का विशालकाय पंडाल पर्यटन उद्योग के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। इसमें पर्यावरण को ध्यान में रखकर उठाए गए क़दमों को विशेष रूप से दर्शाया गया है, जिनमें पर्यटन के विकास के लिए आवश्यक उपाय और वन्यजीव पर्यटन शामिल हैं। माना जा रहा है कि अगले दो वर्षों में विदेशी यात्रियों की वार्षिक संख्या बढ़ने के साथ ही भारत विश्व के सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन क्षेत्रों में शामिल हो जाएगा। **

[Pause 10 seconds]

MALE: संवाद 6

FEMALE: महिलाः * क्या पढ़ रहे हो विमल? कोई विज्ञान उपन्यास?

पुरुषः नहीं, सीमा। स्कूल प्रोजेक्ट के लिए सौर ऊर्जा पर लेख खोज रहा था पर मिला ख़तरनाक खेलों पर लेख!

महिलाः तो उसमें क्या परेशानी है? गृहकार्य के लिए जो निबंध लिखना है उसे इन पर लिख डालो!

पुरुषः अरे हाँ, और बृहस्पतिवार में तो अभी कई दिन बाक़ी हैं।

महिलाः लेकिन मैम ने तो कहा था निबंध बुधवार तक देना है!

पुरुषः हाँ, पर याद है, पिछले शुक्रवार को उन्होंने एक दिन और देने की बात मान ली थी!

महिलाः तब तो ठीक है। **

[Pause 10 seconds]

FEMALE: ये अभ्यास 1 का अंतिम संवाद था। थोड़ी देर में आप अभ्यास 2 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 2 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

https://xtremepape.rs/

MALE: **अभ्यास 2: प्रश्न 7**

FEMALE: **परीक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता का परिचय देने वाली इस वार्ता को ध्यान से सुनिए और नीचे छोड़े गए खाली स्थानों (a-h) को भरिए।**

ये वार्ता आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: * राष्ट्रीय पाठ्यक्रम समिति ने परीक्षा प्रणाली में सुधार पर अपने विचार रखते हुए कहा है कि परीक्षाएँ अत्यधिक तनाव और चिंता उत्पन्न करती हैं। दरअसल, हमारा विचार यह है कि दसवीं कक्षा की बोर्ड की परीक्षाओं को ऐच्छिक बना दिया जाए। समिति का मानना था कि विद्यालय बोर्ड की परीक्षाएँ इक्कीसवीं सदी के समाज की आवश्यकताओं के उपयुक्त नहीं हैं। ये परीक्षाएँ नौकरशाही सिद्धांतों पर आधारित हैं और मुख्य रूप से भय का स्रोत बनी हुई हैं। इनके कारण बच्चों को अत्यधिक मात्रा में सूचनाएँ याद करनी पड़ती हैं, ताकि वे परीक्षा में उन्हें तुरंत लिख सकें। इस व्यवस्था में न तो बच्चे कुछ सीख पाते हैं और न ही परीक्षाएँ उसे परख पाती हैं।

यह सच है कि शैक्षणिक व्यवस्था में मूल्यांकन की अहम भूमिका होती है। मूल्यांकन हमें यह समझने में मदद करता है कि बच्चे ने कितना सीखा है और किन चीज़ों पर अधिक ध्यान देने की ज़रूरत है। लेकिन वर्तमान समय में मूल्यांकन के नाम पर ली जाने वाली परीक्षाएँ बच्चों के अंदर केवल भय और तनाव पैदा कर रही हैं। हमें परीक्षा के अलावा अन्य पहलुओं पर भी ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि परीक्षा में केवल छात्र-छात्राएँ ही अनुत्तीर्ण नहीं होते, बल्कि उनके साथ पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षा प्रणाली, शिक्षा व्यवस्था और अभिभावक भी नाकाम होते हैं।

विद्यार्थियों का मूल्यांकन तो परीक्षा से हो जाता है, जबकि अन्य पहलुओं का मूल्यांकन होता ही नहीं और अगर होता भी है तो उसको बच्चों के परिणाम की तरह प्रकट नहीं किया जाता है। गाँधीजी का मानना था कि अगर शिक्षक की निगरानी में रहने वाले बच्चे का पतन होता है तो उसके लिए कुछ हद तक शिक्षक ज़रूर ज़िम्मेदार है। दरअसल, विद्यालय में दाख़िले के साथ ही बच्चा एक प्रकार की अंधी दौड़ में शामिल हो जाता है। इस दौड़ में पता ही नहीं चलता है कि जीवन को समझने और दुनिया को जानने और सीखने की ललक कब पीछे छूट जाती है और एक डर अंदर घुस जाता है और वह डर है इस प्रतियोगी विश्व में नाकाम होने का। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: **अभ्यास 2 की यह वार्ता अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 2 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 3 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 3 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।**

[Pause 30 seconds]

© Cambridge University Press & Assessment 2025

https://xtremepape.rs/

FEMALE: अभ्यास 3: प्रश्न 8-15

MALE: **वनस्पति शास्त्री डॉ नीना करानोवा के साथ पत्रकार प्रदीप मेहता की बातचीत को ध्यान से सुनिए और नीचे दिए गए प्रत्येक कथन में रेखांकित की गई ग़लती को सही शब्दों या वाक्यांश का प्रयोग करते हुए ठीक कीजिए।**

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

MALE: प्रदीपः * डॉ नीना करानोवा, आज आप हमें किस के बारे में बताने जा रही हैं?

नीनाः धन्यवाद, प्रदीप जी। आज मेवे की खान के बारे में बात करेंगे?

प्रदीपः मेवे की खान? यह तो बड़ी दिलचस्प जगह लगती है! विस्तार से बताइए!

नीनाः तो सुनिए। मध्य एशिया में चीन से लगता एक देश है किर्गिस्तान। उसकी उपजाऊ वादी का एक छोटा सा क़स्बा है अर्सलानबॉब। इसकी पहाड़ी ढलानों पर दुनिया के सर्वाधिक और बढ़िया अखरोट पैदा होते हैं। एक हज़ार से डेढ़ हज़ार टन। इसलिए इस क़स्बे को मेवे की खान कहा जाता है।

प्रदीपः परंतु, यहाँ इतने अखरोट क्यों पैदा होते हैं?

नीनाः एक तो जलवायु अनुकूल है। दूसरे जल प्रचुर मात्रा में है। अखरोट के जंगल को लेकर बहुत सी किंवदन्तियाँ हैं जो एक-दूसरी को नकारती हैं। कुछ लोग मानते हैं कि अरब देशों का एक माली अखरोट के बीज लेकर आया था जिसने यह जंगल लगाया। दूसरे मानते हैं कि जंगल पहले से था और सिकंदर के सैनिक यहाँ से अखरोट के बीज ले गए जिन्हें यूरोप में जाकर लगाया। वैज्ञानिकों का मानना है कि ये जंगल लगभग हज़ार साल पुराना है। विश्व संरक्षण संघ ने इसे अति विशिष्ट वन मान कर इसका संरक्षण शुरू किया है। इस जंगल में अखरोटों के साथ-साथ सेब, नाशपाती और अलूचे के पेड़ भी हैं।

प्रदीपः इनकी फ़सल कब तैयार होती है?

नीनाः अक्तूबर की शुरुआत में। लेकिन अर्सलानबॉब के निवासी सितंबर से ही अपने मवेशियों के साथ अखरोट के जंगल में डेरे लगाने लगते हैं। वन विभाग की संपत्ति होने की वजह से उन्हें जंगल किराए पर लेना पड़ता है। किराया भरने के बाद वे वहाँ तंबू लगा कर रह सकते हैं और अपने मवेशी चरा सकते हैं। साथ में अपने थैलों में अखरोट जमा करते चलते हैं। इनके थैलों में 20 किलो तक अखरोट आ जाते हैं।

प्रदीपः अखरोट नीचे गिर जाते हैं या इन्हें तोड़ना पड़ता है?

नीनाः कुछ अखरोट पकने पर नीचे गिर जाते हैं जिन्हें बीनने में बच्चे बड़े कुशल होते हैं। लेकिन बचे अखरोटों के लिए पेशेवर तोड़ने वालों को पेड़ों पर चढ़ाया जाता है जो डालियों को हिला-हिला कर अखरोट नीचे गिराते हैं। यह जोखिम का काम है क्योंकि डालियाँ टूटने से लोग गिर भी जाते हैं। अखरोट इस क्षेत्र का मुख्य निर्यात है। इसकी हर चीज़ क़ीमती है। लकड़ी आलीशान फ़र्नीचर बनाने के काम आती है। टूटे और हल्की क़िस्म के अखरोटों का प्रयोग तेल निकालने और दूध बनाने में किया जाता है। अखरोट को मेवों में सबसे स्वास्थ्यप्रद माना जाता है इसलिए इसकी माँग लगातार बढ़ रही है।

https://xtremepape.rs/

प्रदीपः क्या जलवायु परिवर्तन का असर इस जंगल पर भी दिखाई दे रहा है?

नीनाः जलवायु परिवर्तन ही नहीं अत्यधिक दोहन का असर भी पड़ रहा है। निर्माण और लकड़ी के लिए पेड़ काटने और मवेशी चराने से जंगल छीज रहा है। बेमौसम की बारिश, बर्फ़बारी और मिट्टी की कटान के कारण अखरोटों की पैदावार घट रही है, बीमारियाँ फैल रही हैं और जानकार किसानों की संख्या भी घट रही है। इसे रोकने के लिए कार्यशालाएँ लगा कर जागरूकता फैलाई जा रही है और संरक्षण के नियम कड़े किए जा रहे हैं।

प्रदीपः नीना जी, इस रोचक जानकारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

नीनाः आपका भी धन्यवाद। **

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 3 की यह बातचीत अब आप फिर से सुनेंगे।

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 30 seconds]

MALE: अभ्यास 3 अब समाप्त हुआ। थोड़ी देर में आप अभ्यास 4 सुनेंगे। अब आप अभ्यास 4 के प्रश्नों पर ध्यान दीजिए।

[Pause 30 seconds]

FEMALE: अभ्यास 4: प्रश्न 16–23

MALE: खेल, पत्रकारिता और व्यवसायीकरण पर अगली बातचीत को ध्यान से सुनिए और निम्नलिखित वाक्यों को पूरा करने के लिए A, B अथवा C में से किसी एक विकल्प को सही [✓] का निशान लगा कर चुनिए।

यह बातचीत आपको दो बार सुनाई जाएगी।

[Pause 5 seconds]
[Signal]
[Pause 3 seconds]

FEMALE: * खेल सिर्फ़ शारीरिक गतिविधि नहीं है। योग के चरम बिंदु पर आप आत्म-साक्षात्कार के सबसे निकट होते हैं। उसी तरह खेल के चरम पर पहुँचकर खिलाड़ी समझता है कि वो यश, पैसे और निजी सुरक्षा के लिए नहीं खेल रहा। बल्कि ऐसे गौरव के लिए खेल रहा है, जो धन या यश से कभी प्राप्त नहीं होता। मनोविज्ञान की दृष्टि से देखें तो खेल एक ऐसी आन्तरिक इच्छा है जो हमारे व्यवहार को बदल कर ऐसी शारीरिक क्रियाओं की ओर ले जाती है जिससे हमारा विकास होता है। खेल में व्यक्ति को तैयार करने अथवा प्रोत्साहन देने की आवश्यकता नहीं होती है, बल्कि वो अपनी आन्तरिक इच्छानुसार उसमें भाग लेता है। इससे मानव को हर्ष और संतोष मिलता है।

MALE: भारत में खेलों को कुछ हद तक लोकप्रियता तब मिली जब 1928 में भारतीय हॉकी टीम ने ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता था। इससे भारतीय खेलों में युगान्तरकारी परिवर्तन आया। 1932 में भारतीय क्रिकेट टीम ने पहली बार टेस्ट क्रिकेट में भाग लिया। इन घटनाओं से खेलों को नया पाठक वर्ग मिला और खेल पत्रकारिता में विशेषज्ञों का उदय हुआ। परंतु ज़्यादातर खेल-खबरें मात्र सूचनात्मक ही थीं। 1947 के बाद पत्रकारिता में आए बदलावों के साथ-साथ खेल समाचारों में भी बदलाव आया।

FEMALE: पचास और साठ का दशक आते-आते भारत की नई पीढ़ी तो खेलों के प्रति जागरूक और उत्सुक हो चली थी पर समाचार पत्रों में खेलों को पर्याप्त स्थान नहीं मिल पा रहा था। इस उदासीनता के लिए खेलों के प्रति आम भारतीय की मानसिकता ज़िम्मेदार थी, जो खेलों को बिगड़ जाने की वजह मानता आया था। उत्तर भारत में एक कहावत भी है, "पढ़ोगे-लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे-कूदोगे

© Cambridge University Press & Assessment 2025

https://xtremepape.rs/

तो बनोगे ख़राब।" आकाशवाणी और दूरदर्शन ने क्रिकेट, हॉकी ओर फुटबॉल जैसे लोकप्रिय खेलों का आँखों देखा हाल और समीक्षाएँ प्रसारित करते हुए कुछ हद तक इस कमी को पूरा किया।

MALE: नब्बे के दशक में भारत ने खुली वैश्विक अर्थव्यवस्था का हिस्सा बनने की ओर क़दम बढ़ा दिए। पत्रकारिता और खेल पत्रकारिता पर भी इस मुक्त अर्थव्यवस्था का असर पड़ना अवश्यंभावी था। अब अख़बारों के लिए खेल, विशेषरूप से क्रिकेट, 'खेल की बात' नहीं रही। वह भारतीय अस्मिता और संस्कृति का हिस्सा बन गई। नए-नए रेडियो और टेलीविज़न चैनलों की शुरुआत हुई और खेल और खिलाड़ियों को व्यवसायों की तरह देखा और तैयार किया जाने लगा। खिलाड़ी बड़े-बड़े ब्रांड बन गए और मीडिया ने बाज़ार व जन-सामान्य में बनी उनकी पहचान को भुनाना शुरू कर दिया। इन सब में भूमण्डलीकरण के कारण उभरे टेलीविज़न और प्रिंट मीडिया तथा सोशल मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

FEMALE: विज्ञापनदाताओं को आकर्षित करने की मुहिम में अब ख़बर और मनोरंजन के बीच फ़र्क़ नहीं किया जाता। सत्तर और अस्सी के दशक में भी मनोरंजन और खेल की ख़बरों के लिए अलग से पृष्ठ हुआ करते थे, लेकिन वर्तमान की तरह खेल को अख़बार या चैनल की प्रमुख ख़बर के रूप में प्रकाशित और प्रसारित करने के बारे में शायद ही किसी ने सोचा होगा! आज तो क्रिकेट की ख़बरें धड़ल्ले से सुर्ख़ियाँ बनती हैं, क्योंकि क्रिकेट में आकर्षण, पैसे और मनोरंजन तीनों का मेल है। अब खेल कार्यक्रमों में खेल-संवाददाता नहीं बल्कि स्वयं खिलाड़ी अपना मूल्यांकन करते रहते हैं। खिलाड़ी खिलाड़ी के बारे में बताता है। इससे खेल पत्रकारिता का चरित्र बदला है। जब खिलाड़ी ही अपना मूल्यांकन करने लगेंगे, वही व्याख्याकार हो जाएँगे तो उसपर सवाल उठना स्वाभाविक है।

MALE: संचार क्रान्ति ने भी खेल और खेल पत्रकारिता में आमूलचूल बदलाव किए हैं। देश और विदेशों से संचालित होने वाले सैकड़ों खेल और सोशल मीडिया साइटों ने खेलों की परिचर्चा को दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचाने का कार्य किया है। इन वेब माध्यमों पर स्वतंत्र अभिव्यक्ति की आज़ादी ने खेलों के प्रति मत-मतांतरों को भी बढ़ाया है। आज खेलों और खेल पत्रकारिता से जुड़ी अनेक सकारात्मक एवं नकारात्मक बातें इन्हीं माध्यमों के ज़रिए सामने आ रही हैं। न्यूमीडिया के माध्यमों ने लाखों की संख्या में खेल पत्रकारों, विश्लेषकों, समीक्षकों एवं स्तंभकारों की वह फौज तैयार कर दी है, जो संचार के परम्परागत माध्यमों द्वारा संभव नहीं थी। **

[Pause 30 seconds]

MALE: **अभ्यास 4 की इस बातचीत को अब आप फिर से सुनेंगे।**

[Pause 3 seconds]
[Repeat from * to **]
[Pause 1 minute]

FEMALE: **अभ्यास 4 और यह परीक्षा समाप्त हुई।**
This is the end of the examination.

https://xtremepape.rs/

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (Cambridge University Press & Assessment) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Education Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cambridgeinternational.org after the live examination series.

Cambridge International Education is the name of our awarding body and a part of Cambridge University Press & Assessment, which is a department of the University of Cambridge.

https://xtremepape.rs/